मालवा-निमाड़

जाग्रत मालवा

नवंबर 2024
मूल्य 10.00 रुपये

पंजीयन क्रमांक : MPHIN/2021/82532

मासिक जागरण पत्रिका

जनजाति समाज की सनातन परम्पराएं

भगवान बिरसा मुंडा की जन्म जयंती पर मनाए जाने वाले
" **जनजातीय गौरव दिवस** " की हार्दिक शुभकामनाएं |

Azadi Ka Amrit Mahotsav

SHAKTI
PUMPING LIFE

सूर्य ही नई शक्ति

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

सौर ऊर्जा का उपयोग एवं अपार फ़ायदों को सभी जानते है, और इसलिये हर जगह एवं हर क्षेत्र में इसका अस्तित्व दिखने लगा है. अब सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के साथ साथ घरेलु बिजली के उपयोग में भी होने लगा है.

शक्ति पम्पस् ने शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम को विकसित किया है.

MRP 29500/-

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

- 150 वॉट का एक सोलर पेनल
- लिथीयम एंड फास्फेट (LFP) बैटरी 60 Ah
- MPPT चार्ज कंट्रोलर 20 A
- डीसी सिलिंग फैन
- 02 व्हाईट एलईडी बल्ब 6 वॉट

विशेषताएं

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम में एक बार का निवेश जो आपको साल-दर-साल फायदा पहुंचाएं.

- बिजली के बिल में कमी
- लम्बे समय तक चले
- भरोसेमंद एवं बाधा रहित परफॉर्मेंस
- रख-रखाव एवं चलाना आसान
- पर्यावरण-अनुकूल
- प्रचुर मात्रा में उपलब्धता
- परंपरागत ऊर्जा के स्रोतों पर निर्भरता से मुक्त
- सरल संचालन
- लिथियम बैटरी की लाईफ अन्य सामान्य बैटरी की तुलना में अधिक है एवं यह बहुत जल्दी चार्ज होती है.

सोलर कंट्रोलर की विशेषताएं

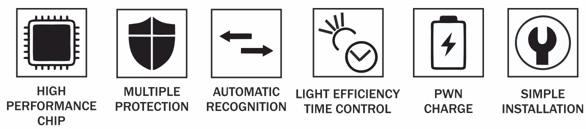

कार्यप्रणाली

India : Toll Free No. 1800 103 5555

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर - 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला-धार (म.प्र.) - इंडिया फोन.: +91-7292-410500
ई-मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: **1800 103 5555**

* नियम व शर्तें लागू

जाग्रत मालवा
इन्दौर दिनांक 5 नवम्बर 2024 मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN/2021/82532
वर्ष : 04 अंक : 06
•••
कार्तिक शुक्ल – 4
युगाब्द ५१२६

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
अरुण सपकाले
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
अशोक वर्मा
राकेश दांगी
राजेश सोनी
•••
मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी–1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731–3551341
•••
Email :
jagratmalwa@gmail.com
jagratmalwa

स्वामी – विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए–11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी–1, केसरदीप एवेन्यु इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित। संपादक अरुण सपकाले
फोन नं. 0731–3551341

अपनी बात

ॐ

हिन्दू जीवन पद्धति दुनिया की श्रेष्ठ और आदर्श जीवन पद्धति है। वसुधैव कुटुम्बकम् और सर्वे भवन्तु सुखिनः के मूलभाव को हृदय में रखकर लोक व्यवहार करना इसका मूल मंत्र है। नित नये परिवर्तन लाने के लिए संपूर्ण समाज निरन्तर कार्य कर रहा है। वर्तमान में मुख्य रूप से पाँच परिवर्तन लाने के लिए समाज तैयार है। इनमें प्रमुख रूप से **स्व** का बोध अर्थात स्वदेशी को अपने जीवन में उतारना इसके अन्तर्गत स्वभाषा, स्वभूषा, स्वभोजन, स्वदेश भ्रमण, भजन, कीर्तन आदि का ध्यान रखना है। इसी के साथ कुटुम्ब प्रबोधन की विशेष चिन्ता करना परिवार के सभी सदस्यों को साथ में बैठकर धर्म परंपरा राष्ट्र और समसामयिक विषयों पर चर्चा करना और अपने परिवार के बच्चों को संस्कारित करना प्रमुख है। समाज में कोई ऊँच-नीच नहीं, न ही हमारे धर्म ग्रन्थों में इसका कहीं उल्लेख है। विधर्मी हमारी इस कमजोरी का लाभ उठाकर हमारे समाज को तोड़ने का कुत्सित प्रयास कर रहे हैं। हमारी सबकी पहचान एक है और वह है **"हिन्दू"** इसलिए हमारा व्यवहार भेदभावमुक्त तथा समरसतायुक्त हो।

पर्यावरण के सरंक्षण के लिये हम सबको मिलकर कार्य करना होगा। इसका प्रारंभ स्वयं से करना होगा। मोहल्ले, गाँव, गली में पर्यावरण की सुरक्षा हेतु हमें नये-नये प्रयोग करना होंगे।

इसी के साथ एक नागरिक के रूप में हमारे कर्तव्यों का निष्ठा पूर्वक पालन करना हम सभी का राष्ट्रीय धर्म है। राष्ट्र की सम्पत्ति का संरक्षण, कानून, संविधान का पालन, यातायात नियमों का पालन जितना अत्यावश्यक हो उतने ही संसाधनों का उपयोग करना हम सभी का पुनीत कर्तव्य है।

इन छोटे-छोटे परिवर्तनों को जीवन में उतारने के लिये हम प्रणपूर्वक कार्य करें तो निश्चित हमारा राष्ट्र, उन्नति के शिखर छुएगा। साथ ही हम सभी आनंद पूर्वक जीवन का लाभ उठा सकेंगे।

कैसा होगा कल का भारत,
इस पर चिन्तन बहुत जरूरी है।
जन-जन का भविष्य हो उज्ज्वल
पंच परिवर्तन बहुत जरूरी है।।

देव उठनी एकादशी

शिवांश शर्मा

देव उठनी एकादशी, जिसे प्रबोधिनी एकादशी भी कहा जाता है, हिंदू धर्म का एक प्रमुख त्यौहार है। यह कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि को मनाया जाता है। इस दिन का धार्मिक महत्व इसलिए है क्योंकि भगवान विष्णु, जो चार महीने तक योगनिद्रा में रहते हैं, इस दिन जागते हैं। इस चार महीने की अवधि को **चातुर्मास** कहा जाता है, जो आषाढ़ शक्ल एकादशी से शुरू होकर कार्तिक शुक्ल एकादशी पर समाप्त होती है।

देवशयन और जागरण की कथा - पौराणिक कथा के अनुसार आषाढ़ शुक्ल एकादशी के दिन भगवान विष्णु शयन के लिए क्षीरसागर में जाते हैं और चातुर्मास के दौरान निद्रा में रहते हैं। इस अवधि में विवाह, गृह प्रवेश जैसे शुभ कार्यों पर रोक लग जाती है। जब भगवान विष्णु देव उठनी एकादशी के दिन जागते हैं, तभी से शुभ कार्यों की शुरुआत होती है। इस एकादशी के दिन से विवाह और अन्य धार्मिक अनुष्ठान प्रारंभ किए जाते हैं। एक अन्य कथा के अनुसार, जब भगवान विष्णु योगनिद्रा में थे, तब असुरों और दानवों ने पृथ्वी पर अत्याचार किया। देवताओं ने विष्णु जी से प्रार्थना की कि वे जागकर संसार की रक्षा करें। तब विष्णु जी ने इस दिन निद्रा से उठकर दानवों का संहार किया और पृथ्वी पर शांति स्थापित की। इस कारण देव उठनी एकादशी का विशेष महत्व है।

धार्मिक महत्व - देव उठनी एकादशी के दिन भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की पूजा की जाती है। भक्त व्रत रखते हैं और रात में जागरण करते हैं। ऐसा माना जाता है कि इस दिन व्रत करने से व्यक्ति के पाप नष्ट होते हैं और उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। व्रतधारी भगवान विष्णु का आशीर्वाद पाते हैं, जिससे उनके जीवन में सुख-समृद्धि आती है। इसके साथ ही इस दिन तुलसी विवाह का आयोजन भी किया जाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार इस दिन भगवान विष्णु ने तुलसी जी से विवाह किया जाता था। इस विवाह को प्रेम, भक्ति और समर्पण का प्रतीक माना जाता है।

व्रत और पूजा विधि - देव उठनी एकादशी का व्रत अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। प्रातः काल स्नान कर भगवान विष्णु की पूजा की जाती है। व्रतधारी दिनभर निराहार रहते हैं और सायंकाल भगवान विष्णु और तुलसी जी की पूजा करते हैं। पूजा में दीप, धूप, पुष्प और नैवेद्य का अर्पण किया जाता है। रात्रि के समय भक्तजन जागरण करते हैं और विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करते हैं। अगले दिन द्वादशी तिथि पर व्रत का पारण किया जाता है। व्रतधारी सात्विक भोजन का सेवन करते हैं और अनाज, चावल, तथा तामसिक भोजन से बचते हैं।

तुलसी विवाह का महत्व - देव उठनी एकादशी के दिन तुलसी विवाह का विशेष महत्व होता है। इस दिन भगवान विष्णु ने तुलसी जी को पत्नी के रूप में स्वीकार किया था। तुलसी को हिंदू धर्म में अत्यधिक पवित्र माना जाता है। तुलसी विवाह के आयोजन से घर में सुख-शांति और समृद्धि आती है। महिलाओं द्वारा तुलसी विवाह का आयोजन बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ किया जाता है। तुलसी के पौधे की पूजा से घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है और नकारात्मक ऊर्जा समाप्त होती है। इस दिन तुलसी पूजन के साथ ही

व्रत करने से भगवान विष्णु का विशेष आशीर्वाद प्राप्त होता है।

सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व - देव उठनी एकादशी का महत्व केवल धार्मिक नहीं है, बल्कि इसका सामाजिक और सांस्कृतिक पहलू भी है। इस दिन लोग एक-दूसरे को शुभकामनाएँ देते हैं और विभिन्न धार्मिक-सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं। तुलसी विवाह जैसे अनुष्ठान सामूहिकता और आपसी सौहार्द को बढ़ावा देते हैं। देव उठनी एकादशी शीतऋतु के आगमन का संकेत भी देती है। इस समय प्रकृति अपने सर्वोत्तम रूप में होती है और किसान नई फसलें काटते हैं, जिससे समाज में खुशहाली आती है। देव उठनी एकादशी का पर्व धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस दिन व्रत रखने से व्यक्ति के पापों का नाश होता हैं और मोक्ष की प्राप्ति होती है। भगवान विष्णु और तुलसी जी की पूजा से जीवन में सुख-समृद्धि और शांति का संचार होता है। इस पर्व से शुभ कार्यों की शुरूआत होती है और समाज में एकता एवं उत्साह का माहौल बनता है।

पंच-परिवर्तन

(प. पू. सरसंघचालकजी के अलवर में दिये उद्बोधन का सारांश)

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के शताब्दी वर्ष में सभी स्वयंसेवकों सहित पूरे हिंदू समाज को कुछ संकल्प लेना होंगे, इन संकल्पों को व्यवहार में उतार कर ही, हम भारत को सबल और समर्थ बना सकते है। ऐसा भारत, जो दुनिया का नेतृत्व कर सके, इसके लिए पंच-परिवर्तन का संकल्प सभी लें।

सामाजिक समरसता - सदियों की पराधीनता में अपने धर्म को भूलकर, स्वार्थ और भेद के अधीन हो जातिभेद का चला, छुआ-छूत का चला, ऊँच-नीच भाव पैदा हो गयी, श्रेष्ठ-कनिष्ठ ऐसा हो गया, यह चित्र हमको पूरा मिटा देना है। पूरा हिंदू समाज अखंड है, एक है कोई भेद नहीं है, सभी व्यवहार आपस में चल सकते हैं। एक दूसरे के यहाँ कोई मंगल कार्य में, कोई घटना घटी उसमें जाते हैं, सुख-दुःख में पूछताछ करते हैं, एक-दूसरे का निमंत्रण करते हैं, ऐसे मेरे कुटुम्ब के मित्र कुटुम्ब भी सभी प्रकार के हिंदुओं में होंगे, यहाँ से शुरू करना है, आगे फिर जितना बढ़ सकते हैं बढ़ाना चाहिये। सभी के लिए एक मंदिर, एक कुआँ और एक श्मशान खुला हो।

पर्यावरण - हिंदुओं की परंपरा है, वह सब जगह चैतन्य देखती है, सब जगह परम्परा देखती है। भूमि का वंदन करते हैं **विष्णुपत्नी नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्वमे** चलना पड़ता है, ज़मीन पर लेकिन उठते ही पैर रखने के पहले नमस्कार करते हैं, क्षमा माँगते हैं और फिर अपना व्यवहार करते हैं, साँप की पूजा करते हैं, गाय को माता है मानते हैं, नदी को माता मानते हैं, पर्वतों की प्रदिक्षणा करते हैं, क्योंकि हम मानते हैं कि यह सभी चैतन्यमय हैं, निर्जीव कुछ नहीं है, सभी में जान है और सभी पवित्र हैं, अपवित्रता कहीं भी नहीं है, अस्वच्छता हो सकती है, अपवित्रता कहीं भी नहीं, यह विचार केवल हमारा है दुनिया में किसी का भी नहीं और इसलिये पर्यावरण के बारे में जो-जो होना चाहिये, वह हमको करना है, छोटी बातों से प्रारंभ करना अपने घर में, पानी बचाओ, सिंगल यूज़ प्लास्टिक हटाओ और पेड़ लगाओ। घर को हरित घर बनाना, घर में हरियाली, घर के आँगन में बगीचा और सामाजिक उपक्रमों में भी अधिक से अधिक पेड़ लगाना।

कुटुब-प्रबोधन - हमारी परिवार व्यवस्था ही संस्कारों की पाठशाला ही। अतः सप्ताह में एक बार निश्चित समय पर शाम को अपने घरों में सबने रहना, अपनी श्रद्धानुसार घर में भजन-पूजन हो जाये, उसके बाद घर में बनाया हुआ भोजन आनंद से करना मीन-मेख नहीं निकालना और फिर दो-तीन घंटा गपशप करना, गपशप के दो विषय हैं - पहला है कि अपनी परम्परा क्या है, अपनी यानि अपनी कुल की परम्परा अपने परिवार की परम्परा पर चर्चा करना। दूसरा विषय होगा कि हमारा समाज, उसके लिये हम प्रतिदिन क्या करते हैं, कितना समय देते हैं, कितना खर्चा करते हैं, इसका विचार करके कुछ छोटे-छोटे संकल्प सभी लोग लें। अपने घर के अंदर भाषा, भूषा, भजन, भ्रमण, भोजन अपना होना चाहिये, बाहर हमको मजबूरी में क्या करना पड़ता है वह बात अलग है घर की चौखट के अंदर यह सब नहीं चलेगा, यह सब अपना होगा भाषा, भूषा, भ्रमण, भोजन और हमारा परिवार मोहल्ले का आधार रहेगा।

स्वदेशी जीवनशैली - हम कौन हैं? स्वदेशी से लेकर तो स्व गौरव तक सारी बातें उसका प्रबोधन होना चाहिये और उसका आचरण जो घर में बनता है वह बाहर से नहीं लाना, अगर लाना है तो उस पर रोजगार किसी का चलता है इसलिए लाना है अपने यहाँ का, जो अपने देश में बनता है वह बाहर देश का नहीं खरीदना, उसके बिना काम चलाना अगर अपने देश में बनता नहीं है तो और नहीं ऐसे चल ही नहीं सकता है जीवन आवश्यक है तो ठीक है अपनी शर्तों पर ख़रीदेंगे, फिज़ूल खर्ची नहीं करना। सादगी से रहना, वैभव का प्रदर्शन नहीं करना, शादी-ब्याह में फ़ालतू खर्चा नहीं करना, उतना खर्चा आप समाज की सेवा में लगाओ, मंगल निधि दो बचाकर। यह स्वदेशी है, इसमें स्व का बोध है, स्व का बोध होता है तो हम कौन हैं इसका बोध होता है, तो हमारे कौन हैं यह ध्यान में आता है।

नागरिक अनुशासन - नियम पालन करके चलना, नागरिक अनुशासन है। नागरिकता बोध, हम इस देश के नागरिक हैं, इस देश में हमारा अपना राज्य तंत्र है, हमने चुनकर दिये हुए प्रतिनिधि हैं, वह मिलकर नियम बनाते हैं हमारे प्रतिनिधियों के नाते, उसका पालन हमको करना चाहिये, छोटी-छोटी बातें टैक्स समय पर भरो, लाल बत्ती मत तोड़ो, आंदोलन वगैरा होते हैं, तंत्र में उसकी सुविधा है, लेकिन आंदोलन करना है तो बस के काँच नहीं फोड़ना, सार्वजनिक संपत्ति को नष्ट नहीं करना, जन-जीवन की हानि नही हो।

यह पाँच बातें हम सभी के जीवन में आनी चाहिये, हमको इसको समाज में ले जाना है इसलिये आने वाले डेढ़-दो साल में यह, अपने घर का, अपने जीवन का, अपने सामाजिक क्रियाकलापों का और अपने आजीविका के क्रियाकलाप का, यह चित्र बनना चाहिये। इन पाँच बातों को अपने जीवन के चारों पहलुओं में लागू करते हुए इसके बारे में परिचितों से संवाद करना, यह काम हमको करना है। सब कुछ करते समय इस विचार को मन में सदैव जागृत रखकर, सजग होकर यह सारे काम करना, इसकी आवश्यकता आज है।

समरसता का सुन्दर उदाहरण

हिन्दू समाज के सभी बंधु एक ही माता के पुत्र है। समाज को तोड़ने के बाहरी प्रयासों के बावजूद हम सब एक है। समाज जागृत हो रहा है और अपने विरुद्ध किये जा रहे, बांटने के षड्यंत्रों को समझ भी रहा है।

इसी का सुन्दर उदहारण मंदसौर के भागोर ग्राम में देखने को मिला है।

यहाँ एक अनुसूचित जाति के परिवार में मृत्यु का दुखद अवसर आया। उनकी पीढ़ी को अपना दुःख समझ, उस परिवार के साथ पूरा हिन्दू समाज आ खड़ा हुआ। पगड़ी की रस्म के समय सभी समाज के बंधु इकट्ठा हुए और पगड़ी पहनाई। बाद में सभी ने साथ में भोजन भी ग्रहण किया। इस अवसर पर संत समाज भी उपस्थित था।

संत नामदेव की वाणी

धनि धनि ओ राम बेनि बाजै।
मधुर मधर धनि अनहत गाजै ।।
धनि धनि मेघा रोमावली ।।
धनि धनि क्रिसन ओढ़ै कांबली ॥
धनि धनि तू माता देवकी ।
जिह ग्रिह रमईआ कवलापती ॥
धनि धनि बनिखंड बिन्द्राबना ।
जह खेलै सी नाराइना ॥
बेनु बजावै गोधनु चरै ।
नामे का सुआमी आनंद करै ।
(श्रीगुरुग्रंथ साहिब पृ. 988)

संत नामदेव, कृष्ण के द्वारा मधुर स्वर से बजने वाली वंशी को धन्य कहते है । उससे प्रकट होने वाली

अनहद धुन भी मधुर है । वह भेड़ भी धन्य है जिसकी रोमावली (बाल) से कमली (कंबल) बनी है, जिसे कृष्ण ओढ़े हुए हुए है । देवकी माता! तू धन्य है, तेरे घर स्वयं कमलापति (भगवान् विष्णु) अवतरित हुए है। वृन्दावन के वे जंगल भी धन्य है, जहाँ भगवान् श्रीकृष्ण (नारायण) खेले है। संत नामदेव का ईश्वर वंशी बजाता है, गाय चराता है और आनन्द करता है।

संत रविदास के भक्तों की सिंगाजी महाराज यात्रा

ब्रहमपुर (बुरहानपुर) के आलमगंज से संत रविदास के भक्तगण संत सिंगाजी महाराज का निशान लेकर पैदल चलकर सिंगाजी मंदिर जाते हैं। आश्विन (कुंआर) महीने की ग्यारस को निकल कर 35 किलोमीटर की यात्रा चार दिन में पूरी करके सिंगाजी महाराज मंदिर पहुँचते है। सिंगाजी मंदिर पहुंचने के पश्चात पूनम के दिन निशान को सिंगाजी मंदिर में चरण पादुका पर रखा जाता है। यह एक मात्र ब्रहमपुर का निशान है, जो मंदिर में चरण पादुका पर चढ़ाया जाता है।

निशान ले जाने की यह परंपरा डेढ़ सौ वर्ष पूर्व से चली आ रही है। इस यात्रा में आलमगंज के युवा उत्साहपूर्वक सॅमिलित होकर सिंगाजी महाराज की अपने-अपने घरों में पूजा करते है। ये युवा आलमगंज में पहले घर-घर में भ्रमण कर पूजा-पाठ करने के बाद सिंगाजी महाराज मंदिर के लिए रवाना होते हैं। पैदल यात्रा करते हुए उन्हें चार दिन लग जाते हैं, जगह-जगह स्वागत एवं फूलमाला से स्वागत भी किया जाता है एवं पूजा-पाठ कर सिंगाजी महाराज को याद कर उनकी भक्ति में डूबे रहते हैं। इस वर्ष भी यह यात्रा श्रद्धा-भक्ति के साथ आयोजित की गई है। आलमग्ज के सुख-समृद्धि की कामना के लिये निकाली जाने वाली ये यात्रा सामाजिक सद्भाव का जीता-जागता उदाहरण है।

घर में ही देने योग्य संस्कार कौन से है?

घर याने केवल इमारत, आश्रयस्थान, उपहारगृह, भोजनालय या विश्रामधाम नहीं है। घर याने वहाँ वास करने वालों को उत्तम बनाने वाला एक संस्कार केंद्र है। बड़ों की बातें सुनते हुए, उनका आचरण देख-सुन कर, बच्चे स्वयं उनकी आदतें लगा लेते हुए, प्रयोग करते हुए, संवर्धित होने का संस्कार केंद्र है। वैसा घर ही कुटुंब होता है।

संस्कार याने उत्तम बनाने की प्रक्रिया है। पशुओं की भाँति रहने वाले मनुजों को मानव बनाने के लिए तथा मानव को देवत्व तक ऊँचा उठाते हुए, उसमें माधव बनने की सुपात्रता संवर्धित करना केवल संस्कारों से ही संभव है। इसलिए घर के बुजुर्ग बच्चों को कालानुकूल प्रदान करने योग्य अति अमूल्य धरोहर याने ये संस्कार होते हैं।

अपने प्राचीन ऋषियों ने मानव जीवन में मानव को माधव बनाने हेतु 16 संस्कारों की परिकल्पना की है। उनमें ऐसा कहा है कि जन्म से पहले तीन, जन्म के बाद 12 तथा मरणोपरान्त एक, ऐसे जीवन में 16 संस्कार प्रात करने चाहिये।

जन्म के पहले तीन : गर्भाधान, पुंसवन, सीमान्तोन्नयन।

जन्म के बाद 12: जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, निष्क्रमण, कर्णवेध, चौला, विद्यारंभ, उपनयन, वेदारंभ, केशान्त, समावर्तन व विवाह।

मृत्यु के बाद एक : अंत्येष्टि।

इस प्रकार 16 संस्कार हैं। आधुनिक जमाने में सब संस्कार प्रदान कर सकने वाले आचार्य पुरुष नहीं हैं। अतः16 के केवल नामों का ही यहाँ उल्लेख किया है। उनमें से कुछ का अनुसरण हमने किया तो भी हमारा जीवन उदात्त होगा, इसी भाव से यहाँ उल्लेख किया है।

मंगल भवन अमंगलहारी पुस्तक से साभार।

जनजाति गौरव दिवस

प्राचीन काल से भारत की पुण्यभूमि पर अनेक महापुरुष, ऋषि-मुनि, समाज सुधारक, वैज्ञानिक, क्रांतिकारी वीर, सम्राट व योद्धा अवतरित हुए हैं। ऐसे ही एक देशप्रेमी जनजाति वीर थे भगवान बिरसा मुण्डा ।

दक्षिण बिहार के छोटा नागपुर क्षेत्र में 15 नवंबर 1875 को सुगना मुण्डा व करमी देवी के घर एक बालक का जन्म हुआ। बृहस्पतिवार को जन्म होने के कारण उसका नाम बिरसा रखा गया।

साहब साहब एक टोपी - बिरसा को मिशन स्कूल में पढ़ने भेजा गया। वहाँ पादरी उसे चोटी रखने से मना करते, गोमांस खाने को कहते, इसाई रीतियाँ पालने को कहते। बिरसा का बालमन इसे स्वीकार न करता। उसके तन-मन में अंग्रेज पादरियों के विरुद्ध घृणा की ज्वाला भड़क उठी। उसने पादरी नोट्रेट से कह दिया **साहब साहब एक टोपी है!** यानी अंग्रेज अधिकारी और पादरी एक जैसे ही हैं।

बिरसा अपने गाँव लौट आया। गांव में वैष्णव धर्मावलम्बी आनन्द पाण्डे से रामायण, महाभारत आदि की कहानियाँ सुनते-सुनते बिरसा के मन में अपने इतिहास, धर्म संस्कृति का गौरव की पहचान जाग उठी। वे सिर पर सफेद पगड़ी बांधने लगे, जनेऊ पहनने लगे, तुलसी माता की पूजा करने लगे। उन्होंने नये पंथ की स्थापना की जिसे **बिरसाईत पंथ** कहा जाने लगा।

क्रांतिकारी बिरसा- उन्होंने जनजाति समाज को संगठित कर अंग्रेजों के विरुद्ध जन-आंदोलन छेड़ दिया। सामाजिक सुधारों के साथ-साथ राजनीतिक शोषण के खिलाफ संघर्ष शुरू हो गया। उसका प्रभाव बढ़ता देख इसाई मिशनरी बौखला गये। उन्होंने अंग्रेज अफसरों से बिरसा को गिरफ्तार करवा दिया। जब बिरसा रिहा हुए तब उनकी जगाई स्वतंत्रता की ज्वाला चारों ओर फैल चुकी थी। तीर-कमान लिये हजारों युवा, अंग्रेजों और उनके पिट्ठुओं से दो-दो हाथ करने के लिये तैयार हो गये थे। जंगल का अधिकार वापस करने और इसाई मिशनरी को भारत छोड़कर जाने की मांग जोर पकड़ने लगी।

कुटिल अंग्रेज- गुप्तचरों और भेदियों की मदद से पुलिस ने बिरसा को गिरफ्तार कर लिया। इस खबर से पूरा क्षेत्र सुलग उठा। 9 जून 1900 के दिन इस महानायक की रांची जेल में ही रहस्यमयी रूप से मृत्यु हो गई। ऐसा माना जाता है कि कुटिल अंग्रेजों ने पादरियों के कहने पर उन्हें जहर देकर मार दिया और चुपचाप उनके शव को जला दिया।

बिरसा कहते- अंग्रेज शासक और पादरी मिलकर इस देश को भ्रष्ट कर रहे हैं। दोनों की टोपियाँ एक हैं। वे हमारी शिखा, जनेऊ की जगह क्रॉस टांगना सिखाते हैं। हमारे सनातन धर्म, हमारे भगवान, हमारी संस्कृति, पहनावा सब खत्म कर देंगे। यदि ऐसा होता रहा तो आदि काल से चली आ रही जनजाति संस्कृति ही समाप्त हो जायेगी ।

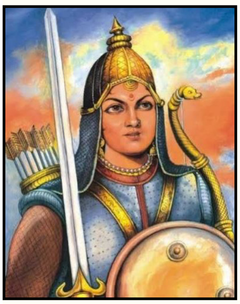

रानी दुर्गावती अपने नाम के अनुरूप ही तेज, साहस और शौर्य का प्रतिमान थी। जिसने मालवा के शासक बाज बहादुर, दिल्ली के सुल्तान शेरशाह सूरी और मुगल बादशाह अकबर को युद्ध के मैदान में नाकों चने चबवा दिए। दुर्गावती ने मुगल सेना के सामने झुकने से इंकार कर स्वतंत्रता और अस्मिता के लिए युद्ध भूमि को चुना। इस युद्ध में घायल दुर्गावती ने स्वयं की कटार से आत्मोत्सर्ग कर दिया।

मात्र 17 वर्ष की आयु में पहले स्वतंत्रता संग्राम में शूरवीरता दिखा कर काले पानी की सजा पाने वाले क्रांतिकारी थे **भीमा नायक**। 1857 में हुए अंबापानी युद्ध में युवक भीमा की महत्वपूर्ण भूमिका थी। तात्या टोपे जब निमाड़ आए थे तो भीमा ने ही उन्हें नर्मदा पार करने में सहयोग किया था। अंग्रेजों ने उन्हें धोखे से कैद कर लिया। उनकी मृत्यु 29 दिसंबर 1876 को पोर्ट ब्लेयर में हुई।

जनजाति में जवारों की उपासना

रिकेश बैरागी

जनजाति समाज प्रकृति के समीप रहकर अपनी आजीविका को चलाता है, उसी प्रकृति के अनुरुप अपने त्यौहारों पर्वों को मनाकर, उसमें आनंद-उत्सव के साथ उसी को आराध्य भी बना देता है।

जनजाति समाज में ऐसा ही एक परंपरागत पर्व है जवारे डालने का जो कि नवरात्र के आरंभ से शुरु होता है और यह परंपरा बरसों बरस से चली आ रही है। जनजाति क्षेत्र में जिस गाँव में इस उत्सव को मनाया जाता है, वहाँ आनंद, उत्साह, आराधना भक्तिभाव में रह कर इसे तन्मयता के साथ परंपरागत रूप में मनाया जाता है। यह पर्व माता की आराधना के अनुरुप ही उसी के समानानांतर होता है, जिसमें व्रत, उपवास, ध्यान, तप, नियम, संयम, साधना का समावेश होता है।

जनजाति समाज वाड़ी माता की साधना करता है, उसका विधि-विधान से पूजन करता है, विशेष रुप से पूजक और उसके परिजन साथ ही, भक्त जो ज्वारों का नियम रखते है, वे जवारों के दिनों में नियमानुसार तप-सयंम के साथ साधना करते है। जवारों का पूजन नवरात्रि के प्रथम दिन से शुरु होता है, पूजन स्थल की तैयारी कुछ दिनों पहले से की जाती है। परंपरा का निर्वाहन कर रहे भक्त के घर आंगन के समीप पूजन स्थल का मण्डप तैयार किया जाता है। सभी ग्रामवासियों को जवारे डालने का निमंत्रण दिया जाता है। प्रथम दिवस सभी के अनुकुल शुभ समय में सभी मिलकर मण्डप में एकत्र होते है और भक्त के खेत पर जाते है, जहाँ धरती माता की विधि विधान से पूजनकर उन्हें श्रीफल चढ़ाकर धरती माता से वहाँ की मिट्टी लेने की आज्ञा ली जाती है। साबे यानि बोहेणी, जो कि एक प्रकार का बड़ा पात्र होता है, में खेत की मिट्टी ली जाती है। साबे में मिट्टी लेकर सभी मण्डप की ओर आ जाते है। मण्डप में पूजन स्थान पर प्रथम पाँच टोकरी में मिट्टी डालते है और एक बड़ा सा पाटला भी होता है, जिस पर तीन पात्र होते है। एक धर्मी राजा का, दूसरा खत्रिज (पुर्वजो) का, तीसरा वाड़ी सिंदूर का होता है। इनमें भी खेत की मिट्टी डाली जाती है। गागर (मिट्टी का घड़ी जिसमें पानी होता है) के ऊपर भी टोकरी में जलहण माता के नाम के जवारे डाले जाते है। वहीं मिट्टी की पिंडी भी बनाई जाती है। देवी-देवताओ के आह्वान के साथ सभी पात्रों में गेहूं तथा जौ डाले जाते है और उस पर हल्की परत मिट्टी की डाल कर जल का छिड़काव किया जाता है। जवारे स्थापना के पश्चात दीप धूप देकर पूजनकर भक्तजन माता का प्रसाद ग्रहण कर घर प्रस्थान करते है। पूजक और उसका सहयोगी मण्डप में रहता है, वह उपासना के इन दिनों में मण्डप में रहकर नियम, संयम के साथ साधना में लीन रहता और सात्विकता के साथ पूजा पद्धति से आराधना करता है।

स्थापना की शाम के बाद सभी ग्रामीण मण्डप के निकट आना शुरु कर देते है और रात्रि के प्रथम पहर में पूजा कर आरती की जाती है, गाँव का बड़वा (पुजारा) गायण करता है, जिसमें प्रथम रात्रि में पाँचों तत्वों की स्तुति के साथ सुर्यदेव, चंद्रदेव और तारा मंडल की गायण के माध्यम से स्तुति की जाती है। महिला और पुरुष दो समुह में गरबा गाते है और गाने के साथ ही मद्धम नृत्य करते हैं। नृत्य गरबे की लय पर आधारित होता है, ताल के लिए ढाक (डमरु का बड़ा रुप) का उपयोग किया जाता है। मध्य रात्रि तक कार्यक्रम समाप्ति के पश्चात सभी माता और जवारे के दर्शन कर घर चले जाते है। अगले दिन सुबह विधि विधान से पूजन किया जाता है और उसी रात को बढ़वा (पूजारा) श्री गणेश, शिवजी, और माता पार्वती का गायण करता है, फिर महिला पुरुष दो समुह में गरबा करते है और इसी प्रकार पूजन के साथ उत्सव मनाया जाता है। तीसरी रात धर्मी राजा का गायण और चौथी रात बाबा देव का गायण, अगली रात माता सावन के साथ समस्त माताओं का गायण जो सम्भवतः दो रातों तक चलता है। अंतिम रात में कुल देवी या ग्राम माता का गायण किया जाता है। प्रत्येक रात गायण के बाद गरबा किया जाता है अंतिम रात अष्टमी की होती है जिस पर जागरण किया जाता है और उसी रात पूजन से पहले पूजक मण्डप में एक नींबू को एक

स्थान पर गाढ़ देता है, उस स्थान से लगभग सभी अनभिज्ञ रहते है। फिर जब गांव का बढ़वा (पूजारा) आता है और उस पर बाबा देव का अंश होता है, तब वह मण्डप में प्रवेश करता है और पूजक द्वारा छुपाए हुए नींबू को ढूँढता है और उसके बाद सभी को आशीर्वचन के साथ सभी को मंगलमय और अच्छी गुणवत्ता वाली फसल का वरदान देता है। रातभर गायण और गरबे के पश्चात सुबह सभी घर

जाते है और स्नान कर फिर से मण्डप के पास आते है, वहां पूजारा पूजन करने के साथ हवन की तैयारी करता है और धर्मीराजा, सावन माता की स्तुति के साथ पंचभूतो, पांच तत्वों का हवन किया जाता है। अंत में बाबा देव के अंश से ओतप्रोत बढ़वा अग्निमें प्रवेश करता है। हवन की यह अग्नि सभी बाधाओं को नष्ट कर देती है। उसके बाद निश्चित स्थान पर माता को भोग लगाया जाता है। पशु-बली की मान्यता है।

गाँव की नौ कन्या आगे आती है और एक युवा आकर माता की तलवार को उठाता है, जिसके बाद कन्या एक-एक जवारे को अपने सिर पर धारण करती है। जवारों को पूरे गांव में भ्रमण करवाया जाता है। साधक की इच्छानुसार जवारे उसके आंगन में उतारे जाते है, जहाँ साधक और उसका परिवार पूजन करता है। सुर्य देव के अस्त होने तक सभी गांव के जलाशय के समीप आ जाते है और शुभकामनाओं अच्छी फसल गुणवत्ता की मनोकामना के साथ जवारों का विर्सजन कर दिया जाता है।

पूजक, जवारों का विशेष ध्यान रखता है कि वे कितने समय में कितने बढ़ रहे है और मिट्टी की नमी कितनी है, कब और किस समय मिट्टी को कितने जल की आवश्यकता होती है? इससे आने वाली फसल का अंदाजा लगाया जाता है कि मिट्टी की नमी किस प्रकार की है, फसल की बौवनी के बाद किस स्तर का पानी फसल में देना है, जिससे आने वाली फसल की गुणवत्ता बनी रहे और फसल को अच्छी तरह से कैसे पकाया जाएं।

बुआई का त्यौहार दिवासा (नवाई)

प्रियंका तोमर

जनजाति समाज द्वारा फसल बुआई के बाद मनाया जाने वाल त्यौहार दिवासा है। अलग-अलग जनजातिय क्षेत्रों में इस त्यौहार के अलग-अलग नाम और रीतिरिवाज है, जैसे की नवाई कुछ क्षेत्रों में (सेंधवा,अलीराजपुर जिला) में नवाई गरबा का आयोजन भी किया जाता है। इस त्यौहार में स्वादिष्ट व्यंजन जैसे ढ़ेबरे (उड़द की दाल का व्यंजन) और ताये (चावल, गेहूँ, बेसन का व्यंजन) बनाये जाते है।

सबसे पहले देवों की पूजा की जाती है और स्वादिष्ट व्यंजनों का भोग लगाया जाता है, महुवे की दारू की धार डाली जाती है। उसके बाद परिवार के सदस्य व अन्य रिश्तेदार भोजन ग्रहण कर सकते है। हर गाँव में दिवासा अलग-अलग दिन मनाया जाता है, रिश्तेदारों को बुलाया जाता है और महिलाओं के द्वारा मेहँदी लगाई जाती है।ढोल बजा कर नृत्य किया जाता है, लोक गीत गाये जाते है। सैंधवा-आलीराजपुर में मनाया जाना वाला यह त्यौहार जीवन के कृषि के साथ जुड़ाव की प्रतीक है।

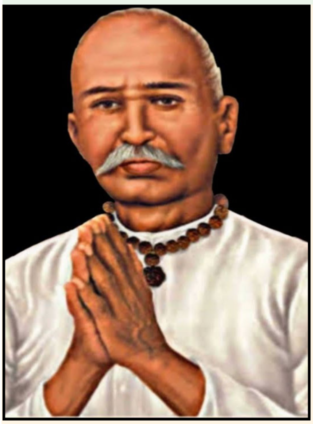

19वीं शताब्दी के आखिरी दशक में भील समुदाय के बीच से उभरे आन्दोलन का नेतृत्व **गोविन्द गुरु** ने किया। उन्होंने **सम्प सभा** की स्थापना की। 11 नवंबर 1913 को मानगढ़ पहाड़ी पर उन्होंने एक विशाल समागम आयोजित किया। अंग्रेजों ने अत्यंत निर्ममता से गोलियां चलाई। जिसमें 1500 से अधिक भील जनजाति के लोग बलिदान हुए। इस प्रकार का बलिदान इतिहास में दुर्लभ ही है।

बिरसा डेविड कैसे बने धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा

डॉ. उत्तम मोहन सिंह मीणा

प्रकृति पूजन हमें वेदों से प्राप्त हुआ, जिसके प्रति नगरीय समाज की अपेक्षा जनजातीय समाज अधिक आग्रह रखता प्रतीत होता है। यदि गौर से देखें तो जनजातीय समाज भारत के पूर्ण समाज का ही अंग है। कुछ तथाकथित राजनैतिक लोग हमारे समाज को बाँटकर अपना उल्लू तो सीधा करते हैं किंतु वह हमारे देश को बाँटने की ओर कमजोर करने की कोशिश भी कर रहे हैं। आज मूल रूप से हमें एकीकृत समाज की आवश्यकता है। भारतीय समाज में अनेक ऐसे महापुरुष हुए हैं जिन्होंने अपना जीवन ही समाज की एकता और समुदाय को मजबूत करने में अर्पित किया था जिसमें एक नाम है जनजाति नायक भगवान बिरसा मुंडा का। भगवान बिरसा मुंडा का नाम लेते ही अचानक से नसों में खून तेजी से बहने लगता है।

बचपन में उनकी पढ़ाई सलगा से हुई किंतु उन्हें जल्द ही एक जर्मन मिशन स्कूल भेज दिया गया। यहीं पर उनका मतांतरण करवा कर उन्हें बिरसा मुंडा से बिरसा डेविड बना दिया गया। उन्हें शीघ्र ही ईसाई मतांतरण के रहस्यों का ज्ञान हो गया ओर उन्होंने बीच में ही अपनी पढ़ाई छोड़कर घर वापसी की। यहाँ से अपने स्वयं के मत में आस्थावान होकर उसका प्रचार-प्रसार किया। उन्होंने जल्दी ही अपना स्वयं का मुंडा राज घोषित किया और लोग उन्हें प्रेम से धरती आबा कहने लगे। मात्र 25 वर्ष की आयु में भगवान बिरसा मुंडा ने अंग्रेजों के दाँत खट्टे कर दिए थे जबकि आजकल के युवा इस आयु में अपने काम भी ठीक से नहीं कर पाते हैं। अंग्रेजों और साहूकारों से जमीन छुड़ाने के लिए आपने एक आंदोलन प्रारंभ किया जिसे उलगुलान नाम से पुकारा जाने लगा। इस आंदोलन से अब अपनी भूमि पर अपना ही अधिकार हो रहा था और अंग्रेजों को कर नहीं देने के लिए भी लोग तैयार हो रहे थे। इस सबके बाद अंग्रेजों ने भगवान बिरसा के ऊपर 500/- रू. का नगद पुरस्कार घोषित किया और उन्हें पकड़कर 2 वर्ष के लिए जेल भेज दिया गया। उस समय यह राशि 500/- रू. आज की तरह सामान्य नहीं थी बल्कि बहुत अधिक थी।

जेल से रिहा होने के बाद उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन करने के लिए अपने लोगों के साथ गोपनीय बैठकें प्रारंभ कर दीं। इसी कारण वर्ष 1899 में उनका राज्य छोटानागपुर में 550 वर्ग किलोमीटर तक व्याप्त हो गया और उनका संघर्ष अंग्रेजों से डोम्बारी पहाड़ी में हुआ। इस संघर्ष में 400 जनजाति योद्धाओं को वीरगति प्राप्त हुई, जबकि अंग्रेजों ने मात्र 11 की मृत्यु की ही पुष्टि की थी। 03 मार्च 1900 को भगवान बिरसा मुंडा को गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें जेल में कठोर कारावास भुगतना पड़ा। उन्हें दिन में केवल 1 घंटे ही अपनी अँधेरी कोठरी से बाहर आने दिया जाता और किसी से मिलने नहीं दिया जाता था। धीरे-धीरे उनकी तबियत बिगड़ती रही और 09 जून 1900 को सुबह 09 बजे उन्होंने अपनी अंतिम श्वास ली। कई क्रांतिकारियों द्वारा अंग्रेजों पर जहर देकर मारने का आरोप भी लगाया गया किंतु अंग्रेजों ने मृत्यु का कारण हैजे को ही माना जिसका कोई प्रमाण प्राप्त नहीं हुआ था।

वास्तव में भगवान बिरसा मुंडा का योगदान केवल भारतीय स्वतन्त्रता के लिए ही नहीं था बल्कि उन्होंने जनजातीय समुदाय के उत्थान के लिए भी बहुत संघर्ष किया। उनके संघर्ष और त्याग के चलते देशभर में उन्हें उलगुलान और भगवान मानने लगे और विधिवत उनका पूजन-अर्चन भी प्रारंभ हो गया। विगत कुछ वर्षों से शासन द्वारा उनके जन्मदिवस को भगवान बिरसा मुंडा जयंती के रूप में मनाया जाने लगा है जो भारत के जनजातीय समाज को ही नहीं अपितु पूरे राष्ट्र को अपने भगवान से परिचित करवाने का काम कर रहा है। हम आशा करते हैं कि भारत का सम्पूर्ण समाज अपने वास्तविक नायकों को पहचाने और उनके शरणागत हो जाए तभी प्रत्येक भारतीय जनजाति और प्रत्येक जनजाति भारतीय हो पायेगा।

भगवान सबके है

डॉ. रत्नदीप निगम

सामाजिक समरसता, हृदय के भीतर से उत्पन्न वह संस्कार है, जो हमारे व्यवहार में दिखाई देने वाला और महसूस होने वाला आचरण है।

इसी संस्कार को व्यवहार में एक जीवंत उदाहरण द्वारा रतलाम में घटित होते देखा है। घटनाक्रम यूँ है कि कुछ समय पहले रतलाम में गायत्री परिवार की एक कर्मठ एवं संस्कारित कार्यकर्ता ने अपने संस्कारों से सामाजिक परिवर्तन कर दिया। कॉलोनी में एक मंदिर है और उस मंदिर के बाहर और पूरी कॉलोनी में एक महिला प्रतिदिन झाड़ू लगाती थी। वह प्रतिदिन मंदिर के बाहर झाड़ू लगाती और बाहर से मंदिर को देखती रहती, परंतु वह कभी मंदिर के भीतर नहीं गई तथा कभी उसे किसी ने मंदिर के भीतर जाने से रोका भी नहीं। उस महिला ने स्वेच्छा से भी कभी मंदिर में जाने का प्रयास भी नहीं किया, केवल भगवान की मूर्ति को बाहर से ही निहारती रहती। वर्षा हो या कड़ाके की ठण्ड, वर्षों तक वह अपना कर्तव्य पालन करते हुए झाड़ू से सड़क की सफाई करती रही। एक दिन वह मंदिर को निहार रही थी, तभी मंदिर के पड़ोस में रहने वाली गायत्री परिवार की महिला की नजर उस पर पड़ी। उन्होंने तभी उस सफ़ाई करने वाली महिला के मनोभावों को समझ लिया, लेकिन कुछ बोला नहीं। कुछ ही दिनों के बाद कॉलोनी के महिला मंडल ने मंदिर परिसर में एक धार्मिक आयोजन किया, जिसमें स्थानीय विधायक और पार्षद सहित बड़ी संख्या में कॉलोनीवासी उपस्थित थे। कार्यक्रम प्रारंभ हुआ और अपनी उचित गति से चल भी रहा था, भाषणबाजी और स्वागत हो रहा था, लेकिन पड़ोस में रहने वाली महिला, जो उस महिला मंडल की अध्यक्ष थी, वो उस कार्यक्रम में उपस्थित नही थी। कार्यक्रम के समाप्त होने ही वाला था, तब वो महिला, झाड़ू लगाने वाली महिला को लेकर मंदिर के भीतर आई और उस वंचित समाज की महिला को सीधे मंच पर लाकर कुर्सी पर बैठा दिया। सभी उपस्थित लोग सोचने लगे कि क्या हो रहा है? तभी उन्होंने घोषणा की कि आज के कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि यह मंदिर परिसर की सफाई करने वाली महिला है, जो प्रतिदिन हमारी कॉलोनी एवं मंदिर के बाहर सफाई करती है। सभी लोगों ने जोरदार तालियाँ बजाई और सबने उठकर उस सफाईकर्मी को फूलमालाएँ पहनाई। विधायक जी ने अपनी शॉल उस महिला को ओढ़ाकर अभिनदंन किया। अब निर्णय होना था मंदिर के भीतर सफाई का। अध्यक्षा ने प्रस्ताव रखा कि मंदिर प्रागंण और गर्भगृह की सफाई भी अबसे प्रतिदिन ये हमारी बहन ही करेंगी। सभी ने एक स्वर में ये बात खुशी-खुशी स्वीकार कर ली।

उस दिन से मंदिर में सभी समाजों के लोग दर्शन के लिये आ रहे है।

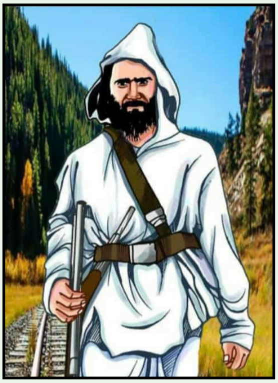

टंट्या भील निमाड़ क्षेत्र के अद्वितीय नायक थे। उन्होंने 1857 के महासमर में भील समुदाय को संगठित किया। आम जनता उनको **टंट्या मामा** कहकर उनका आदर करती थी। अंग्रेजों द्वारा लूटे गए धन को टंट्या मामा उनसे छीन कर वापस गरीबों में बांट दिया करते थे। प्रत्यक्ष संघर्ष में पकड़ पाने में असफल रहने पर घात लगाकर उन्हें पकड़ा गया। 4 दिसंबर 1889 उन्हें फाँसी दे दी गई।

जाग्रत मालवा अब सोशल मीडिया पर भी

जाग्रत मालवा से वेबसाइट फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम व यूट्यूब पर जुड़कर देशभर के विशेषकर मालवा के समाचार प्राप्त कर सकते हैं।

अभी फॉलो करें - किसी भी प्लेटफॉर्म पर जाकर जाग्रत मालवा सर्च करें

गुरु नानकजी के युवाओं के लिए विचार

अनव रघुवंशी

गुरु नानकजी, सिख धर्म के पहले गुरु और महान संत थे, जिन्होंने मानवता के लिए एक महत्वपूर्ण संदेश दिया। उनके विचार आज भी युवाओं के लिए प्रेरणादायक संदेश हैं। गुरु नानकजी ने अपने जीवन में कई मूलभूत सिद्धांतों को स्थापित किया, जो आज की युवा पीढ़ी के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं। आइए, उनके विचारों को विस्तार से समझते हैं।

समानता और भाईचारा- गुरु नानकजी ने सिखाया है कि सभी मनुष्य समान हैं। उन्होंने जाति, धर्म और रंग के भेदभाव को नकारा। उनके अनुसार, सच्चा धर्म वह है, जो सभी को एक समान देखे। आज के समय में जब समाज में भेदभाव बढ़ रहा है, युवाओं को गुरु नानकजी के विचार अपनाना चाहिए। उन्हें यह समझना चाहिए कि मानवता की सेवा करना और सभी के साथ मिलकर चलना ही सच्चा धर्म है।

ईश्वर की भक्ति- गुरु नानकजी ने ईश्वर की एकता और उसके प्रति भक्ति का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि हमें ईश्वर की सच्चाई और उसकी कृपा पर विश्वास करना चाहिए युवाओं को इस बात को समझना चाहिए कि भक्ति केवल पूजा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह अपने कार्यों में सत्यता और नैतिकता को अपनाने में भी है।

कर्म और श्रम- नानकजी ने कहा है कि **कर्म करो, फल की - चिंता मत करो।** इसका अर्थ है कि हमें अपने कार्यों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए और परिणाम की चिंता नहीं करना चाहिए। आज के युवा अक्सर नतीजे की चिंता करते हैं और इससे उन्हें तनाव होता है। गुरु नानकजी के इस सिद्धांत को अपनाकर वे अपने कार्यों में अधिक समर्पण और मेहनत कर सकते हैं।

सादा जीवन उच्च विचार- गुरु नानकजी का जीवन साधारण था, लेकिन उनके विचार गहरे और उन्नत थे। उन्होंने सिखाया कि जीवन को सरल और नैतिक बनाना चाहिए। युवा पीढ़ी को चाहिए कि वे भौतिकता के बजाय आत्मिकता को महत्व दें। सादा जीवन जीना और उच्च विचारों को अपनाना ही असली सफलता है।

सेवा और सहायता- गुरु नानक जी ने सेवा के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि दूसरों की सहायता करना और समाज की भलाई के लिए काम करना सच्चा धर्म है। आज के युवा जब समाज सेवा में हिस्सा लेंगे, तो न केवल समाज को लाभ होगा, बल्कि वे व्यक्तिगत रूप से भी संतोष और खुशी पाएंगे।

सीखने की प्रक्रिया- गुरु नानकजी का जीवन सीखने और ज्ञान प्राप्त करने का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। उन्होंने हमेशा ज्ञान की खोज की और दूसरों को भी सीखने के लिए प्रेरित किया। युवा पीढ़ी को चाहिए कि वे जीवन भर सीखते रहें, नई चीजें जानें और ज्ञान का विस्तार करें।

प्रेम और करूणा- गुरु नानक जी ने प्रेम और करुणा का महत्व समझाया। उन्होंने कहा कि हमें सभी प्राणियों से प्रेम करना चाहिए। युवाओं को चाहिए कि वे अपनी सोच में करुणा को शामिल करें और दूसरों के प्रति सहानुभूति दिखाएं।

धैर्य और सहनशीलता- गुरु नानकजी ने धैर्य और सहनशीलता का महत्व बताया। उन्होंने सिखाया कि कठिनाइयों का सामना करते समय धैर्य बनाए रखना चाहिए। आज की तेज रफ्तार जिंदगी में जब युवा अक्सर तनाव में रहते हैं, गुरु नानकजी का यह सिद्धांत उन कठिनाइयों का सामना करने की ताकत है।

सच्चाई और ईमानदारी- गुरु नानकजी ने हमेशा सच्चाई का प्रचार किया। उन्होंने बताया कि ईमानदारी सबसे बड़ी ताकत है। आज के युवा जब अपने कार्यों में सच्चाई को अपनाएंगे, तो उन्हें न केवल सफलता मिलेगी बल्कि समाज में भी उनका सम्मान होगा।

आध्यात्मिकता- गुरु नानकजी ने आध्यात्मिकता का प्रचार किया। उन्होंने कहा कि हमें अपने भीतर की आत्मा को पहचानना आना चाहिए। यह आज के युवा, जो भौतिक सुखों की तलाश में हैं, उन्हें गुरु नानकजी के आध्यात्मिकता के संदेश को अपनाना चाहिए। यह उन्हें मानसिक शांति और संतोष देगा। गुरु नानकजी के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने कि उनके समय में थे। उनकी शिक्षाएं, जो समानता, सेवा, सच्चाई और आध्यात्मिकता पर आधारित हैं, युवा पीढ़ी के लिए मार्गदर्शक बन सकती हैं। यदि युवा इन विचारों को अपनाते हैं, तो न केवल उनका व्यक्तिगत जीवन सुधरेगा, बल्कि समाज भी एक सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ेगा। गुरु नानकजी का संदेश है कि हम सभी को एकजुट होकर प्रेम, करूणा और सेवा के मार्ग पर चलना चाहिए, जिससे हम एक सशक्त और समृद्ध समाज का निर्माण कर सकें।

म्हारी मातृभाषा नू दर्दु दिनऽदिन बढ़तू जाये रै
अपणु प्यारो हिंदुस्तान जग मऽ निखरतू जाये रै।

अंग्रेजी मa पोरियो पढ़ - पढ़ बोले रै,
म्हारो अनपढ़ भाई डर - डर बोले रै,
अंग्रेजी में सबसी पोरयो लड़तू जाए रै।
अपणु प्यारो हिंदुस्तान....
सब संस्कारों नी म्हारी भाषा हिंदी रै
जग मऽ सबकी प्यारी आशा हिंदी रै
अ अनपढ़ सी ज्ञ ज्ञानी बणउतू जाये रै
अपणु प्यारो हिंदुस्तान....
कोई बोलऽ भीली बोली न कोई बोलऽ निमाड़ी रै,
कोई बोलऽ माळवी न कोई बोलऽ मारवाड़ी रै
गाँव को पोरयो शयर मऽ पढ़ न डरतू जाये रै।
अपणु प्यारो हिंदुस्तान....
म्हारा गाँव की बोली मिठ्ठी - मिठ्ठी लागे रै
हमरी बोली नू मान बढ़ - बढ़ जागे रै
आपणी मातृभाषा नू दरदु मिटायो जाये रै
अपणु प्यारो हिंदुस्तान...

कृष्णा तेजस्वी, इन्दौर म.प्र.

हमारी बातचीत

प्रिय पाठकों,

अगले माह से आपकी अपनी पत्रिका जागृत मालवा में एक नया स्तम्भ हमारी बातचीत प्रकाशित होगा। इस स्तम्भ में आपके सुझाव और मन की बात प्रकाशित करेंगे। आप अपने सुझाव, मालवा-निमाड़ से जुड़ी बातें और समसामयिक विषयों पर अपनी बात व्हाट्सएप, ई-मेल या पत्र के माध्यम से भेज सकते है। आप पत्रिका के लिए सुझाव और अपने मौलिक विचार भी लिख कर भेज सकते हैं, जिनकी सहायता से हम जागृत मालवा को और अधिक अपनी बना सकेंगे।

आपके चयनित पत्रों को हम इस स्तम्भ में प्रकाशित भी करेंगे।

व्हाट्सएप - 9977712561
ईमेल - jagrutmalwa@gmail.com
पता -विश्व संवाद केन्द्र, अर्चना, 76 रामबाग, इन्दौर

भैया! आप 1200 ही देना....

अमन व्यास

ऑफिस पर आंटीजी नित्य सफ़ाई के लिए आती हैं, उनका मासिक वेतन 1500 रुपये है। 4 दिन पहले जब उनका माह पूर्ण हुआ तो मेरे पास 1200 रुपये थे और आंटी यूपीआई उपयोग नहीं करती। तब आंटी ने कहा कि भैया कल दे देना।

उस दिन के बाद आंटी और मैं आज मिले। मैंने आंटी को देने के लिए जैसे ही शेष 300 रुपये आगे बढ़ाये तो आंटी ने जो कहा उसने अंदर तक हिलाकर रख दिया।

...आंटी ने कहा कि भैया! आप 1200 ही दिया करो। क्योंकि आपके यहाँ से छुट्टी की मनाही नहीं होती और कई बार आप भी रिकॉर्डिंग पर चले जाते हो तो स्टूडियो की सफ़ाई नहीं होती। इसलिए हम जितनी मेहनत करते हैं बस उतने ही पैसे लेते हैं, अपनी मेहनत के बगैर मिला पैसा हराम का पैसा होता है।

आंटी के इस उत्तर ने हिला दिया है। भारत के जिस **स्वत्व** की हम बात करते हैं, वह यही तो है।

शूरवीरों को जन्म देने वाली मेवाड़ की भूमि के **राणा पूंजा भील** ने वनांचल को अपने पराक्रम से गौरवान्वित किया। उन्होंने महाराणा प्रताप के सेनापति के रूप में हल्दीघाटी के युद्ध की दिशा बदल दी। पूंजा भील की उपलब्धियों और योगदान को सम्मानित करने के लिए महाराणा प्रताप ने सम्मान के रूप में उन्हें **राणा** की उपाधि प्रदान की।

भूतल नाडेप

सरपट 'सादलपुरी'

चारो-चूरी आंपा-खांपा
उकलो-सुकलो अत्ती-पत्ती
और पुंवाड्या आदाशीशी
आड़ा-राड़ा सगलो चकदो
जिके कां हम बगदो
बगदो बिचारो कुड़े अंई-वंई उड़े
घुस्सो करे बाबूजी तो
फेंकी दे घूड़े और के कंई
कि घूड़ा में पड़ी जाय
तो परबारो सड़ी जाय
सड़े तो बासे कोई चबदे नाक
कोई है तो खांसे
ऐसा भी देख्या अन्नदाता मायबाप
कि वी असी करियाँ हायबाप
कि जो बगदो हमारे परसी थकी थाली दे
विज पापीना इके
आग काड़ी लगइने बाली दे
पर पर यो बगदो कुण है
इका में कईं-कईं गुण है
जरा ध्यान से सुणजो-गुणजो
फिर कदी बी इका खिलाफ
मत बगजो घणु गुणकारी है यो बगदो
चलो एकदन म्हारा सांते खेते
तमारे बगदो भणावा कसी बणे इकी
जैविक खाद अपण बणावा
चारो, गोबर घोल को झारो
ने थोड़ो-थोड़ो गारो परत-दर-परत संवारो
तो भू नाडेप बणेगो न्यारो
तीन मइना में बणेगी खाद
कदी नि भूलोगा रखोगा हमेशा याद
अबे इके बणाणूं कां तो अपणा गांव में
लिमड़ा की छांव में या फिर ऊंचा बेड़ा पे
खला में बणऊं तो अच्छो नि तो खेत का
सेड़ा पे।

संस्कार वर्ग पहेली...!

बांये से दाये

1. भगवान शिव ने यह विष पिया था 3. सूक्ष्म शरीर का एक कोष, मन से बना 6. हिन्दू युवतियों के विरूद्ध इस्लामिक षड्यंत्र 7. पुराणों में वर्णित एक लोक 9. नगर 10. गौ का पालन व रक्षण करने वाले 12. तीन गुणों मे से एक 14. पत्नी के पिता 15. बाण रखने का साधन 16. एक वेद का नाम 18. माता लक्ष्मी का प्रिय पुष्प 20. भगवान महावीर का पूर्व नाम 21. एक नदी 23. अमझेरा के महाराज

1			2	■	■	3	4		5
	■	■	6					■	
7	8			■	■			■	
9		■	■	■	10		■	11	■
12			■	13	■	14			■
■		■	■	15			■	16	
17	■	18			■	■	19	■	■
	■	■		■	20				■
21		■		■	■	■		■	22
	■	23							

उपर से नीचे

1. कुरू वंश की राजधानी 2. उत्साह, चाह 3. एक ज्योतिर्लिंग 4. प्रक्षेपण 5. यम देवता की बहन 8. क्रुद्ध होना, डांटना 11. रामायण में वर्णित एक राक्षसी 13. मामा 17. अहिल्या देवी के पुत्र का नाम 19. महाभारत काल का प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र, नाभिपुर, नर्मदा किनारे स्थित एक नगर, नाभपट्टम 22. एक वर्ष का बारहवां भाग

(उत्तर अगले अंक में)

पिछले माह के उत्तर - बांए से दांए - 1. पद्मनाभ 4. जानापाव 7. वीणा 8. रसखान 9. सेतु 12. चराचर 14. जनक 15. नमन 16. न्याय 18. रवी 20. महा 22. अक्षयकुमार 24. रास

ऊपर से नीचे - 1. परमवीर चक्र 2. भस्मासुर 3. पिनाक 5. वक्रतुण्ड 6. पखावज 10. वचन 11. सुकन्या 13. रमणीय 17. यमराज 18. रमा 19. वीरता 21. हास 22. अम्बा 23. कुल

रेवा तट संस्कृति संवाहक तीर्थ नगरी महेश्वर

कवि नरेंद्र अटल

सनातन संस्कृति और संस्कारों की विरासत को ले वर्तमान को संदेश देती तीर्थ नगरी महेश्वर है। जीवनदायनी मैकलसुता माँ नर्मदा के अमृत जल के उत्तर तट पर महेश्वर नगर स्थापित है। इस पुण्य तट परिक्रमा लगाने की श्रेष्ठ धार्मिक परंपरा देखी जाती है। परिक्रमावासी माँ नर्मदा की परिक्रमा पैदल कर पुण्य लाभ लेते है। महेश्वर नगर का प्राचीन नाम माहिष्मती रहा है। यह चक्रवर्ती सम्राट पराक्रमी राजा सहस्त्रबाहु कार्तवीर्य अर्जुन की नगरी है। माहिष्मती का वर्णन शास्त्रों पुराणों महाकाव्यों सहित रामायण एवं महाभारत में भी उल्लेखित है। हैहयवंशीय राजा साहंस माहिष्मान की वंश परंपरा में श्री दत्त उपासक बाहुबली राजा सहस्त्रबाहु ने रावण जैसे योद्धा को बंदी बना कर अपनी नगरी माहिष्मती में रखा। यहां यदुवंश के अंतिम शासक राजा नील हुए। जाब पांडव राजा सहदेव ने माहिष्मती पर आक्रमण किया तो उनकी सेना जलने लगी। सहदेव ने देखा कि इस नगरी की रक्षा स्वयं अग्नि देव कर रहे है। तो वे राजा नील से सन्धि कर चले गए। माहिष्मती के प्रसिद्धि का वर्णन भगवान शिव से भी जुड़ा है। त्रिपुरासुर का वध करने भगवान शिव ने अग्निबाण छोड़ा था। वह अग्नि अस्त्र यहां नर्मदा संगम पर ही विसर्जित हुआ जहां आज ज्वालेश्वर कालेश्वर महादेव मंदिर स्थापित है।

आदि गुरु शंकराचार्य जी के प्रवास एवं विद्वान मंडन मिश्र के संवाद कारण से भी यह नगर बहुत प्रसिद्ध रहा है। वैदिककाल की सनातनी शिक्षाओं से सज्जित, महान परंपराओं का वाहक और पौराणिक नगर माहिष्मती, स्वयं शिव अर्थात महेश का नगर है इसीलिए यह स्थान महेश्वर कहलाया।

महेश्वर के पूर्व दिशा में श्री ज्वालेश्वर शिव, सप्तमात्रिका, पूर्व मुखी श्री चिंतामन गणेश विराजमान है। पश्चिम में पूर्वमुखी गोबर गणेश, सप्तमात्रिका एवं श्री पंढरीनाथ मंदिर स्थापित है। जहां एक ओर भारतीय संस्कृति को आतातायी आक्रमणकारी मुगल देश के धार्मिक स्थानों को ध्वस्त कर रहे थे। ऐसे षड्यंत्र काल में सत्रहवीं शताब्दी में एक पुण्य महान आत्मा का आगमन महेश्वर नगर में हुआ। पुण्यश्लोक लोकमाता देवीश्री अहिल्याबाई ने अपनी राजधानी महेश्वर को बनाया। होलकर वंश में बहू बनकर आयी देवी अहिल्याबाई ने शिव नगरी महेश्वर को शिव को ही समर्पित कर राजपाठ का निर्वहन किया। ससुर मल्हारराव होलकर, पति खांडेराव एवं पुत्र मालेराव की मृत्यु के बाद देवी अहिल्याबाई ने अपनी प्रजा को आदर्श शासन देने के संकल्प के साथ महेश्वर में कई कार्य किए। मंदिरों के रखरखाव सहित नर्मदा तट पर सुंदर घाटों की निर्माण श्रृंखला बनायी। प्रत्येक घाट पर शिव को स्थापित किया। माँ नर्मदा एवं शिव पूजन उनके प्रतिदिन कार्यों में महत्वपूर्ण कार्य था। किले के जीर्णोद्धार सहित नवनिर्माण में आकर्षक नक्काशियों से महेश्वर को एक सुसज्जित नगर बनाया।

नर्मदा के ठीक बीच टापू में बाणेश्वर मंदिर स्थापित है। यहां पर्यटक नोका से घूमने एवं दर्शन करने जाते है। महेश्वर का अहिल्या घाट का चित्र विश्व प्रसिद्ध है। किले के ऊपर राजवाड़ा स्थित राजगादी, सोने का झूला, लिंगार्चन पूजन स्थान, नर्मदा दर्शन सहित अहिल्येश्वर मंदिर में पर्यटक दर्शन को जाते है। यहाँ स्थित राजा सहस्त्रबाहु का मंदिर श्री राज राजेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है। यहां

कई शताब्दियों से ग्यारह नन्दा दीपक जल रहे है। महेश्वर को गुप्त काशी के नाम से भी जाना जाता है। यहां काशी विश्व नाथ मंदिर भी स्थित है। यहां की सावन कि शाही सवारी क्षेत्र में बहुत प्रसिद्ध है। नर्मदा के घाट पश्चिम में संतो की कुटिया एवं आश्रम बने हुए है। जहां नर्मदा परीक्रमावासियों को सदाव्रत की व्यवस्था रहती है। नर्मदा घाट के मध्य में नर्मदा मंदिर,सत्यनारायण मंदिर,एवं तिलबानेश्वर मंदिर प्रमुख है।

आज महेश्वर मध्य प्रदेश की पवित्र नगरी में सम्मिलित है। पर्यटन की दृष्टि से पर्यटकों की आवागमन अधिक है। संध्या काल में नर्मदा आरती पश्चात बहते जल में जलते दीपों की श्रृंखला इसके आनन्द को द्विगुणित कर देती है। आज महेश्वर को विश्व पटल पर इसकी संस्कृति और संस्कारों ने स्थापित कर दिया है। आज निमाड़ मे स्थित महेश्वर की गिनती भारत के तीर्थ स्थानों में की जाती है। जब तक माँ नर्मदा का अमृत जल बहता रहेगा तब तक इसकी गौरवशाली वैभवगाथा स्थापित रहेगी।

वो बी काई दिन था ...

पीयूष शर्मा

निमाड़ को वो बचपन बी, काई बचपन थो। हम घर म तो पावता न्नी था। दिन्न भर बायर भम्या करणु। दुई न तीन का पहाडा, भले याद नि होय पण इक्कल गंजो दूध पिलान्जो .. यो पहाडो, धम्मक धाडा तक पूरो रटेल रयतो थो। हाथ पांय धुला मऽ लट पट हुई जाता था, पण हाथ सी गोटी न नि छूटती थी। आन चोट न की तो पुछोज मत, दुई दुई फर्लांग तक की गोटी फोड़ देता था। चोट न तो गुल्ली अंटया की बी कई कम नि रय। तीन चोट म तो पूरो अवार कुदी जाता था। खेलनऽ सी पयल गुल्ली बनावण को अल्लग ज मजो रयतो थो। अपन न लाकडी लावणु, आनऽ घर का कोई बड़ा सी दराती वाटऽ गुल्ली बनाड़णु। गुल्ली अच्छी चोट वाळी बण, एका लेण राकेट साइंस लगतो थो।

एका बाद समय आवतो थो, भवरी न को। इना समय क कुण बतावतो थो, यो आज तक पतों नि चल्यो हंइ। पण पूरा गाँव म एक साथ खेल बदलता था। दिन्न भर सब न का हाथ म, भवरी न जाल रय। जां सपाट जगा दिखऽ वहां भवरी घुमाया करनू। खेल म जो हारी जाय, ओकी भवरी म एत्रा घोचा मारणु कि भवरी ज फाटी जाय। अपणा पास कई मोबाइल थो, नि कई वीडियो गेम। कदी सायकल को पुराणों टायर बी मिली जाय, तो अंटया सुद्द ओकज दवाड़ाया करता था। आन कदी कई बी साधन नि होय तो कबड्डी, छियाछ्ई, गधा मार, सार, कवडी जसा गंज का खेल था। सई बात तो या थी, कि अपणा बचपन म हमकऽ कई बात की कमी नि थी।

आज काळ का बच्चा बोर होण लगी गयाज। हमारो दिन कां निकली जातो थो पतों न्नी चलतो थो। बोर तो केवल हम खावता था, वो बी झाड सी तोड़ी न। आज बच्चा न का पास साधन ज्यादा छे, पण आनंद कम हुई गयो। अपना पास कृत्रिम साधन कम था, पाण पूरी प्रकृति अपणों साधन थी। एका लेण आनंद ज आनंद थो।

वीर खाज्या नायक, वीर कोमराम भीम, वीर बुधु भगत, वीर तिलका माँझी, रघुनाथ शाह, वीर शंकर शाह, वीर जतरा भगत, वीर सिद्धो-कान्हो मुर्मु सहित असंेय जनजाति वीरों ने इस्लामिक आक्रमणों तथा अंग्रेजों स्वाधीनता संग्राम में अपना शौर्य प्रकट किया, प्राण न्यौछावर किये।

लव जिहाद से देह व्यापार के षड्यन्त्र तक -

इंदौर पुलिस ने लसूडिया इलाके में स्थित एक फ्लैट से फैजान नाम के एक संदिग्ध व्यक्ति को धर दबोचा। फैजान के साथ मैं इंदौर और खरगोन की दो युवतियों को भी पकड़ा गया। दरअसल मामला एक सेक्स रैकेट का है, जो बीच शहर में स्थित उस फ्लैट मे धड़ल्ले से चलाया जा रहा था। फैजान के मोबाइल से कई अश्लील वीडियो और उनके विवरण भी मिले हैं। उसके पास दो सौ से ज्यादा लोगों के नंबर मिले हैं जो उसके ग्राहकों के हो सकते हैं। मोबाइल में मिली चैट से देह व्यापार किए जाने के साफ सबूत मिले हैं। इतना ही नहीं तलाशी के दौरान, उसके पास नकली रिवाल्वर, तलवार और कई आपत्तिजनक चीजें भी बरामद हुई हैं। मूल रूप से देवास का रहने वाला फैजान, बड़ी शातिरी से अपने अपराधों को अंजाम दे रहा था। मोबाइल में मिले उसके अलग-अलग फोटो से पता चला कि वह समय-समय पर अपना भेष भी बदलते रहता था। उसके पास से सीबीआई का एक नकली कार्ड भी मिला है। पुलिस को पूरा संदेह है कि वह नकली सीबीआई अफसर बनकर लोगों से पैसे एंठता था।

हिंदू संगठनों का कहना है कि फैजान फ्लैट पर ग्राहकों के साथ युवतियों के वीडियो बनवा लेता था और बाद में सीबीआई ऑफिसर बन कर इन वीडियो के जरिए ग्राहकों को वह ब्लैकमेल करता था। इंदौर पुलिस उसकी जांच मानव तस्करी के मामलों में भी कर रही है। संदेह यह भी है कि वह युवतियों को डरा धमका कर देह व्यापार करने के लिए मजबूर कर रहा था। इसके पहले भी क्षेत्र मे सेक्स रैकेट पकड़े जा चुके हैं। तेजी से बढ़ते हुए शहर मे यौन अपराधों को और मजबूती तब मिल जाती है, जब इस के साथ लव जिहाद का षड्यन्त्र भी जुड़ जाता है। लव जिहाद मे फंसी युवतियों को देह व्यापार मे धकेल देना कोई नई बात नहीं है। समाज को इस दृष्टि से भी विशेष चौकन्ना रहना होगा।

अंचल में संचलन

विजयादशमी के दिन ही संघ की स्थापना हुई थी। इसलिए पूरे भारतवर्ष में विजयादशमी से ही संचलन के कार्यक्रम प्रारंभ होते हैं। इस बार का दशहरा विशेष था। इस दशहरे से संघ की स्थापना का सौवां वर्ष प्रारंभ हो रहा है। इसलिए सभी दूर विशेष उत्साह और नए संकल्पों के साथ संघ के संचलन निकले। मालवा प्रांत भी संचलन के उत्साह से सराबोर रहा। प्रांत में प्रत्येक स्थान पर बस्तिशः संचलन निकाले गए। प्रत्येक ग्राम नगर से बड़ी संख्या में स्वयंसेवकों के संचलन में सम्मिलित होने के समाचार आये। अलग अलग बस्तियों से मंदसौर में 23, नागदा की 14, बड़वाह में 10, देवास में, शाजापुर में 10, रतलाम में 10 संचलन निकले। आगर मालवा में, खातेगांव, कन्नौद, सैलाना,शिवपुरी, नामली, देपालपुर, अंजाद इत्यादि अनेक स्थानों पर उत्साह और अनुशासन के साथ संचलन निकले गए।

रतलाम की 22 बस्तियों में 12000 से अधिक स्वयंसेवक संचलन में सम्मिलित हुए। उज्जैन में कुल 65 बस्तियों के 60000 स्वयंसेवकों ने संचालन में सम्मिलित होकर कदमताल की। इंदौर महानगर में पहली बार एक साथ 373 स्थान से संघ का संचलन निकाला गया जिसमें 55000 से ज्यादा स्वयंसेवक शामिल हुए कल। इंदौर में निकले सभी संचालनों में कुल 1350 किलोमीटर का मार्ग तय किया गया।

विजयदशमी के ही दिन राष्ट्रीय सेविका समिति की भी स्थापना हुई थी। अतः संचालन निकालने में मातृशक्ति भी पीछे नहीं रही। राष्ट्रीय सेविका समिति और दुर्गा वाहिनी, दोनों ही की बहनों ने पूरे उत्साह के साथ पेटलावद, बढ़ियामांडू, रतलाम और जावरा इत्यादि स्थानों पर पथ संचलन निकाला।

सभी दूर स्वयंसेवकों को समाज का उत्साहजनक प्रतिसाद प्राप्त हुआ। जब घोष की स्वर लहरियों के साथ कदमताल करते हुए स्वयंसेवक, समाज के बीच से निकले तो समाज जनों ने पूरे उत्साह के साथ संचलन का स्वागत किया। राष्ट्र भाव से भरे स्वयंसेवकों पर पुष्पवर्षा की गई। माता बहनों ने पहले ही संचलन पथ पर रंगोलिया बना रखी थी। संचलन में चलते हुए स्वयंसेवक जब समाज में निकले, तो संपूर्ण वातावरण राष्ट्रभाव से अभिपूरित हो गया। संघ का संचलन न केवल संघ का साक्षात प्रगटीकरण है बल्कि समाज में राष्ट्रऔर धर्म के प्रति निष्ठा और कार्य करने की भावना उत्पन्न करने का एक महत उपक्रम भी है।

नवरात्रि महोत्सव - नवाचारों में झलकती हिन्दू चेतना

हर बार की तरह इस बार भी, पूरे प्रांत में नवरात्र महोत्सव, श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया गया। पंडालों में नौ दिवस तक माँ की आराधना चलती रही। गरबा मंडपों में मातृशक्ति द्वारा गरबा नृत्य किए गए। सम्पूर्ण समाज इन पवित्र दिनों में भक्ति-भाव में डूबा रहा।

दूसरी ओर हर बार की तरह इस बार भी, विधर्मी लोगों की दृष्टि इन आयोजनों पर लगी रही। गरबा पंडालों में मुस्लिमों के स्पष्ट निषेध जैसी अपमानजनक स्पष्ट सूचनाओं के बाद भी कई मुस्लिम युवक, इन गरबा मंडपों में घुसे और अपनी और मर्यादित चेष्टाएं करने का प्रयास किया। किंतु इस बार एक परिवर्तन भी देखा गया। इन अवांछित मेहमानों के स्वागत के लिए इस बार हिंदू समाज तैयार बैठा था। कई जगहों पर ये **अब्दुल** पकड़े गए, जिनकी ठीक-ठाक आव-भगत करने के बाद इन्हें पुलिस को भी सौंप दिया गया। इन घटनाओं से हिंदू समाज में जागरण और अपने मुद्दों के प्रति बढ़ती चेतना का स्पष्ट संकेत मिलता है।

यही नहीं कुछ स्थानों पर तो बहुत ही सुंदर नवाचार भी किए गए। देवास के एक गरबा मंडल में मातृशक्ति ने शस्त्र संचालन का उत्तम प्रदर्शन किया। माता बहनों ने शस्त्रों के साथ गरबा भी किया। ऐसे ही प्रयोग प्रांत में कई अन्य स्थानों पर भी हुए। खंडवा के एक गरबा मंडल में लव जिहाद पर आधारित एक मार्मिक नाटिका का मंचन किया गया। जिसके द्वारा कुछ ही मिनटों में समाज को एक बड़ा सन्देश दे दिया गया। ऐसे आयोजनों का होना हिंदू समाज में अपनी चुनौतियों के प्रति बढ़ रही सजगता को दर्शाता है। उत्सवों के दौरान ऐसे कार्यक्रम, पूरे समाज को सचेत करने के अत्यंत सबल और सक्षम माध्यम बन सकते हैं।

जनजाति संस्कृति

'धरती आबा' भगवान बिरसा मुंडा

दिसम्बर माह के मुख्य व्रत, त्यौहार एवं दिवस

ता. 03 भोपाल गैस त्रासदी, अधिवक्ता दि.
ता. 06 विवाह पंचमी, नाग दिवाली
ता. 06 गुरू तेगबहादुर श. दिवस (तिथि से)
ता. 07 सशस्त्र सेना झंडा दिवस
ता. 13 दादा धूनीवाले निर्वाण दिवस
ता. 25 पं. मदन मोहन मालवीय जयंती

बुक-पोस्ट
जाग्रत मालवा

प्रति,

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11डी, पोलोग्राउण्ड इन्दौर म.प्र. से मुद्रित एवं अर्चना भवन, 76 रामबाग, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक अरूण सपकाले फोन नं. 0731-3551341